# "सुनहरी मौका"

• किरिआचार करहि खट करमा इत राते संसारी । अंतरि मैल न उतरै हउमै बिन गुर बाजी हारी ।1।

**अर्थः-** हे भाई ! दुनियादार मनुष्य कर्म - काण्ड करते हैं । स्नान, संध्या आदि छे प्रसिद्ध निहित धर्मिक कर्म कमाते हैं । इन कर्मों में ही ये लोग व्यस्त रहते हैं । पर इनके मन में टिकी हुई अहंकार की मैल इन कामों से नहीं उतरती । गुरू की शरण पड़े बिना वह मानस जनम की बाजी हार जाते हैं ।

मेरे ठाकुर रखि लेवहु किरपा धारी । कोटि मधे को विरला सेवक होरि सगले बिउहारी ।1। रहाउ।

अर्थः- मेरे ठाकुर रखि लेवहु किरपा धारी मैं देखता हूँ कि करोड़ों मनुष्यों में से कोई विरला मनुष्य तेरा सच्चा भगत है कुमति के कारण और सारे मतलबी ही हैं अपने मतलब के कारण देखने को धार्मिक काम कर रहे हैं ।

• सासत बेद सिम्रित सभ सोधे सभ एका बात पुकारी । बिन गुर मुकति न कोऊ पावै मनि वेखहु करि बीचारी ।2।

अर्थः- हे भाई ! सारे शास्त्र। वेद।सारी ही स्मृतियां।ये सारे हमने पड़ताल के देख लिए हैं।ये सारे भी यही एक बात पुकार-पुकार के कह रहे हैं कि गुरू की शरण आए बिना कोई मनुष्य माया के मोह आदि से निजात नहीं पा सकता । हे भाई ! तुम भी बेशक मन में विचार करके देख लो यही बात ठीक है ।

अठसठि मजन करि इसनाना भ्रमि आए धर सारी । अनिक सोच करहि दिन राती बिन सतिगुर अंधिआरी ।3।

अर्थः- हे भाई ! लोग अढ़सठ तीर्थों के स्नान करके और सारी धरती पे घूम के आ जाते हैं । दिन - रात और अनेकों पवित्रता के साधन करते रहते हैं । पर गुरू के बिना उनके अंदर माया के मोह का अंधकार टिका रहता है ।

धावत धावत सभ जग धाइओ अब आए हरि दुआरी । दुरमति मेटि बुधि परगासी जन नानक गुरमुखि तारी ।4।1।2।

(5-495)

अर्थः- हे नानक ! कह भटक - भटक के सारे जगत में भटक के जो मनुष्य आखिर परमात्मा के दर पर आ गिरते हैं । परमात्मा उनके अंदर

से दुर्मति मिटा के उनके मन में सद्बुद्धि का प्रकाश कर देता है । गुरू की शरण पा के उनको संसार - समुंद्र से पार लंघा देता है ।

• बहु भेख करि भरमाईऐ मनि हिरदै कपट कमाई । हरि का महल न पावई मरि विसटा माहि समाइ ।1।

अर्थः- बहुत सारे धार्मिक पहरावे पहन के दूसरों को ठगने के लिए अपने मन में दिल में खोट कमा के मनुष्य खुद ही भटकन में उलझ के रह जाता है । जो मनुष्य ये दिखावा ठगी करता है वह परमात्मा की हजूरी प्राप्त नहीं कर सकता । बल्कि वह आत्मिक मौत मर कर ठॅगी आदि विकारों के गंद में फसा रहता है ।

मन रे गृह ही माहि उदास । सच संजम करणी सो करे गुरमुखि होई परगास ।1। रहाउ।

अर्थः- हे मेरे मन ! गृहस्थ में रहते हुए ही माया के मोह से निर्लिप रह । पर जिस मनुष्य के हृदय में गुरू की शरण पड़ के समझ पैदा होती है वह मनुष्य ही सदा स्थिर प्रभू नाम सिमरन की कमाई करता है और विकारों से संकोच करता है इस वास्ते हे मन ! गुरू की शरण पड़ के ये करने योग्य कामों को करने का ढंग सीखो ।

जे लख इसतरीआ भोग करहि नव खंड राज कमाहि । बिन सतगुर सुख न पावई फिरि फिरि जोनी पाहि ।3। (3-26)

अर्थः- हे भाई ! अगर तू काम - वासना पूरी करने के लिए लाखों स्त्रियां भी भोग ले अगर तू सारी धरती का राज भी कर ले तो भी सतगुरु की शरण के बिना आत्मिक सुख नहीं मिल सकेगा बल्कि बारम्बार योनियों में पड़ा रहेगा ।

• सुण मन मित्र पिआरिआ मिल वेला है एह । जब लग जोबनि सास है तब लग इहु तन देह ।

अर्थः- हे प्यारे मित्र मन ! मेरा उपदेश सुन । परमात्मा को मिल मिलने का यही मानव जन्म ही समय है । जब तक जवानी में हूँ और सांस चल रही है तब तक ये शरीर काम दे रहा है ।

बिन गुण कामि न आवई ढहि ढेरी तन खेह । मेरे मन लै लाहा घर जाहि । गुरमुखि नाम सलाहीऐ हउमै निवरी भाहि ।1। रहाउ ।

अर्थः- यदि प्रभू के गुण अपने अंदर ना बसाए तो ये शरीर किस काम का ? ये तो आखिर गिर के मिट्टी की ढेरी ही हो जाएगा । हे मेरे मन ! यहाँ से आत्मिक लाभ कमा के अपने परलोक घर में जा । गुरू की शरण पड़ कर यहाँ प्रभू का नाम सलाहना चाहिए । नाम की बरकत से अहंकार की आग अंदर से मिट जाती है आग ये कि मैं बड़ा हूँ मैं बड़ा बन जाऊँ बुझ जाती है ।

सुणि सुणि गंढण गढीऐ लिख पड़ि बुझहि भार । त्रिसना अहिनिस अगली हउमै रोग विकार ।

अर्थः- पढ़े - लिखे लोग बेअंत पुस्तकें लिख - लिख के पढ़-पढ़ के विचारते हैं ज्ञान की बातें सुन - सुन के लोगों की नजरों में विचारवान दिखने का व्यर्थ यतन करते हैं । पर अंदर से दिन रात तृष्णा व्याप रही है । अहम् रोग अहंकार के विकार अंदर कायम है ।

ओह वेपरवाह अतोलवा गुरमति कीमति सार । लख सिआणप जे करी लख सिउ प्रीति मिलाप ।2।

अर्थः- दूसरी तरफ वह परमात्मा इस थोथी ज्ञान चातुर्य की परवाह नहीं करता हमारे ज्ञान उस को तौल भी नहीं सकते । इसलिए गुरू की मति ले के उस की कद्र समझ । यदि मैं लाख चतुराईआं करूँ अगर मैं लाखों लोगों के साथ प्रीत करूँ मिलाप पैदा करूँ

बिन संगत साध न धापीआ बिन नावै दूख संताप । हरि जपि जीअरे छुटीऐ गुरमुखि चीनै आप ।3।

**अर्थः-** गुरू की संगत के बिना अंदर की तृष्णा खत्म नहीं होती । प्रभू का नाम जपे बिना दुख - कलेश बना ही रहता है । हे मेरी जीवात्मा ! परमात्मा का नाम जप के ही इस तृष्णा से मुक्ति मिल सकती है । क्यूँकि जो मनुष्य गुरू की शरण पड़ कर नाम जपता है वह अपने असल को पहचान लेता है ।

तन मन गुर पहि वेचिआ मन दीआ सिर नालि । त्रि भवण खोज ढंढोलिआ गुरमुख खोज निहाल । सतिगुर मेलि मिलाइआ नानक सो प्रभ नालि ।4। (1-20)

**अर्थः-** जिस मनुष्य ने नाम के बदले अपना तन और अपना मन गुरू के हवाले कर दिया जिसने मन हवाले किया और सिर भी हवाले कर दिया उसने गुरू के द्वारा खोज करके उस प्रभू को अपने अंदर ही देख लिया जिसको ढूँढने के लिए सारा जहान तलाश लिया था । हे नानक ! शरण आए को गुरू ने अपने चरणों में जोड़ के प्रभू से मिला दिया और वह प्रभू अपने अंदर अंग - संग ही दिखा दिया ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

## ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"